!! Dwarkapuri-VaikunthDham !! Shree Krishna Temple , Nagpur

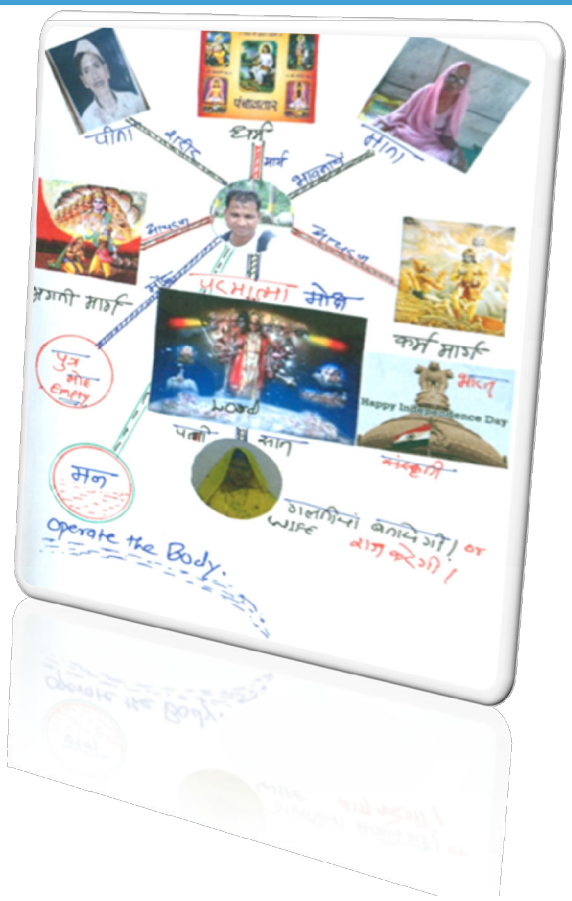

This temple most vision of "DHARM – KARM – PARBHDHA – MOKSHA". We all things searched and observed after we get solution of human life of most important reason. The human birth taken after start body inside the soul. And mind control the soul. It is 24/7 hours working. Human will find only Happiness.

Jay Shree Krishna.....!!!
Vasant Borkar
Team in Mumbai

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

!! Dwarkapuri-VaikunthDham !! Shree Krishna Temple , Nagpur

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

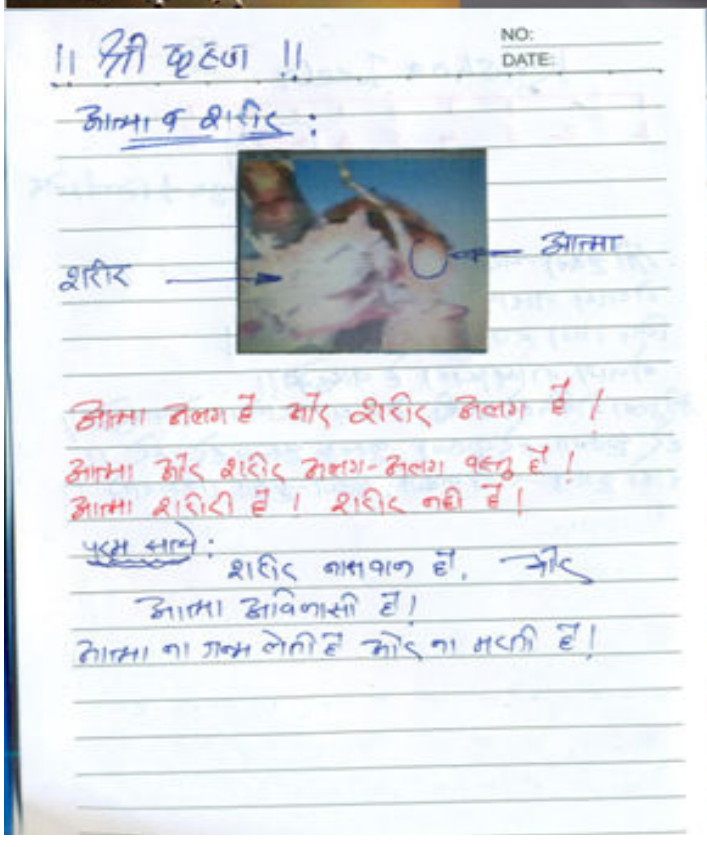

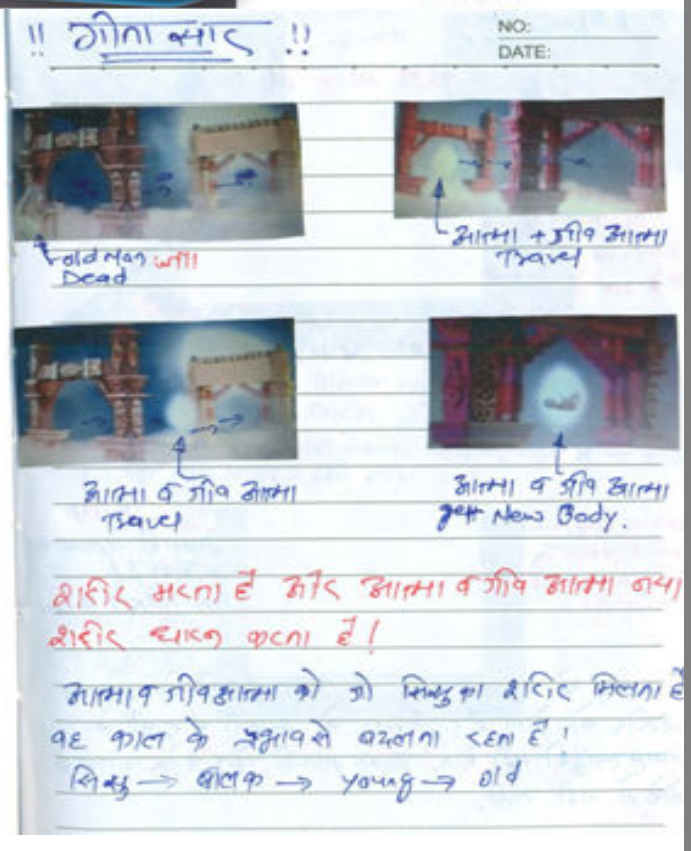

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

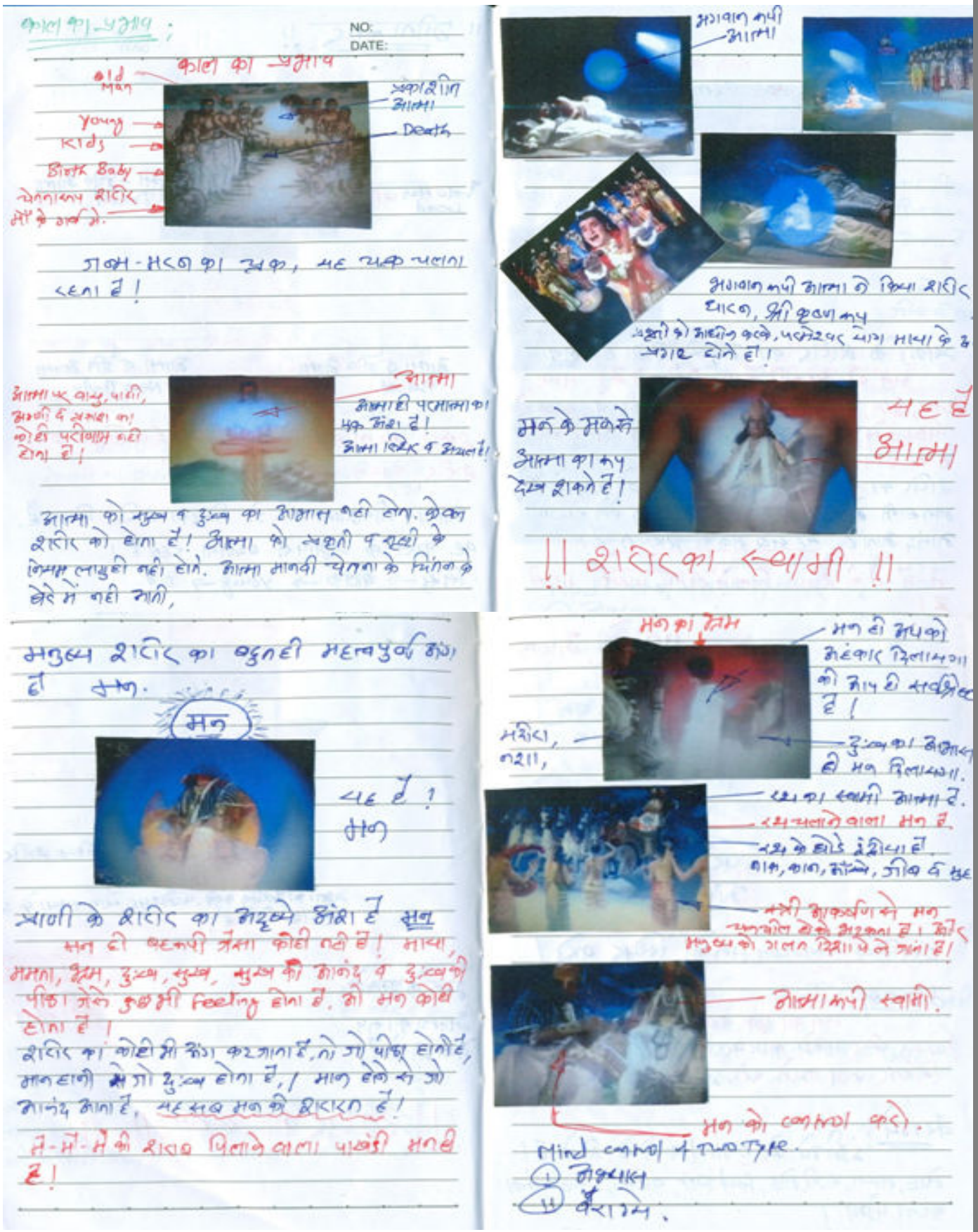

काल का प्रभाव ;

NO:
DATE:

काल का प्रभाव

Old Man
Young
Kids
Birth Baby
चेतनारूप शरीर माँ के गर्भ में.

प्रकाशित आत्मा
Death

जन्म-मरण का चक्र, यह चक्र चलता रहता है!

आत्मा पर वायु, पानी, अग्नि व प्रकाश का कोई परीणाम नही होता है!

आत्मा
आत्मा ही परमात्मा का एक अंश है!
आत्मा स्थिर व अचल है!

आत्मा को सुख व दुःख का आभास नही होता. केवल शरीर को होता है! आत्मा को स्त्री व पुरुष के नियम लागु नही होते. आत्मा मानवी चेतना के चिंतन के बारे में नही आती,

भगवान रूपी आत्मा

भगवान रूपी आत्मा ने किया शरीर धारण, श्री कृष्ण रूप
भक्तों को मार्गदर्शन करके, परमेश्वर योग माया के द्वारा प्रगट होते है!

मन के मनके आत्मा का रूप देख सकते है!

यह है आत्मा

!! शरीर का स्वामी !!

मनुष्य शरीर का बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है मन.

मन

यह है ! मन

प्राणी के शरीर का सूक्ष्म अंश है मन
मन ही बहरूपी जैसा कोई नही है! माया, ममता, प्रेम, दुःख, सुख, सुख की आनंद व दुःख की पीडा ऐसे कुछ भी Feeling होता है, तो मन को ही होता है!
शरीर का कोई भी अंग कट जाता है, तो जो पीडा होती है, मन हानी से जो दुःख होता है, / मान होने से जो आनंद आता है, यह सब मन की शरारत है!
मैं-मैं-मैं की शराब पिलाने वाला पाखंडी मन ही है!

मन का प्रेम

मन ही आपको अहंकार दिलाता है और को क्रोध ही सर्वश्रेष्ठ है!
मदिरा, नशा,
दुःख का आभास ही मन दिलाता है।

रथ का स्वामी आत्मा है.
रथ चलाने वाला मन है.
रथ के घोडे इंद्रियां है.
नाक, कान, आँखे, जीभ व मुख
स्त्री आकर्षण से मन चलित होके भटकता है। और मनुष्य को गलत दिशा पे ले जाता है!

आत्मा रूपी स्वामी.

मन को control करो.

Mind control of two type.
(1) अभ्यास
(11) वैराग्य.

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

मन को अपना दास बनाओ.
[मन का दास मत बनो]

मन ही आपको परमेश्वर प्राप्ती के ओर ले जायेगा !

इसलिये चंचल मन को स्थिर करो !

अभ्यास :
मन को एक कामपर लगाओ, मन भागेगा, फिर पकडो कामपर लगाओ, ऐसे करते-करते निरंतर काम करते रहो. इसीतरह मन स्थिर होगा !

वैराग्य : इंद्रीयों को control करने के लिये है !
मोह, माया, स्त्री मोह, food test, वासना, यह control करना पडेगा !

आत्मा अमर है !

आत्मा —

परमात्मा! आत्मा का प्रकाश ही [illegible]

मन नदी-नदी के [illegible] रहता है, जीव को [illegible] नहि देता, की जीव अपने अंदर देखकर अपने आत्मा को देखे. और आत्मा के अंदर जो परमात्मा का प्रकाश है उसका साक्षात्कार करे.

मोह व भ्रम के बाहर आओगे, तब मन आपको ज्ञान सुनेगा !

मन के द्वारा मोह का संगोह
माने, भाई, बहन, मामा, मीत्र,
लालच, घर, गाडी, पैसा,
वासना स्त्रीका मोह, स्त्रीका आकर्षण.
sexual feeling.

जैसे शरिर नाशवान है वैसे माने, लालच व वासना नाशवान है।

पृथ्वी	पाणी	वायु	पुष्प,	प्राणी	संगीत,	प्रकाश,	चंद्र

पृथ्वी गुणोंका रस ले मन को इस दिशामे लगाये.

वैराग्य : निःस्वार्थ,
फल की चिंता न करते हुये काम करना ही वैराग्य है !

Now	Next
शरिर + माने	नया शरिर + नया माने

⇒ मोह को उत्पन्न करता है !

चरित्र : मोह, लोभ, ईर्षा, इन तीनोंसे मनुष्य अच्छी बाते भी बुरी साबीत करता है,
लालच, अहंकार, क्रोध यह चरित्र मनुष्य को नर्क की ओर ले जाता है !

शरिर Dead	शरिर जीवित	भविष्य
पूर्व जन्म — माने समाप्त हुये है !	अभी का जन्म — माने चालु है शरिर नश्वर है वैसे माने नश्वर है !	आनेवाले समय का जन्म — माने बाद कोन होगा मालुम नही.

100% control of Mind (मन) [कैसे]

⇒ धीरमती, नित निश्चय, दृढ निश्चय,
दृढ निश्चय होगा विश्वास से,
विश्वास रखो परमात्मा में, सत्य में विश्वास
विश्वास रखो धर्म मे, अपने कर्तव्य को जानो तो ही दृढ निश्चय होगा।

सुख, दुःख, हानी, लाभ, क्रोध, लालच इन सबको एक जैसा समजकर कर्म करोगे. मन control मे रहेगा !

अपने मन को संन्यासी बनाओ
मोह, माया छोडके, अपने धर्म के लिये कर्म करे.
मनुष्य इस संसार मे रहते हुये सांसारीक भोगोंका भोग करे, परंतु आसक्ती रहीत होकर, अपने मन से संन्यासी बनकर सुख व दुःख भोगते हुये अपने धर्म को ना छोडे, और कर्म करे.

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

यदि आप मोह, माया के भावना के कहीमें बहना टाला, और मन को अपने वश में ना कर सका, तो आप निष्काम कर्म नहीं करोगे.

मन
मदिरा
वासना
मोह
लोभ, लालच

पुत्र मोह
वासना
लालच
मोह
मन का [illegible]

यह सब मन की कल्पना है, इसमें मन मनुष्य को भटकाके रखता है। और मनुष्य गलत दिशा में जाता रहता है, जीवन भर उलझा हुआ रहता है, अंत में परमात्मा प्राप्ती बिना शरीर त्याग करता है!

हर मनुष्य का जमीर (अंतरात्मा) सच्चे को देख सकता है, और मनुष्य को सच्चे को समझाने की कोशिश करता रहता है! कुछ लोग अपने अंतर की आवाज को सुनते हैं; परंतु कुछ लोग स्वार्थी, उच्च हस्ती के लोग, अपने अंतरात्मा की आवाज को दबाने की कोशिश करते हैं! और गलत काम करते रहते हैं! और मन के माया जाल में फसे रहते हैं!

भावना:

मनुष्य जब कोई कर्म करता है तो, उसका कोई कारण होता है, कोई प्रेरक होता है, जिसकी प्रेरणा से मनुष्य कर्म करता है, उसको भावना होती है, इस भावना की पूर्ती के लिये मनुष्य अच्छा / बुरा कर्म करता है!
कर्म की जड़ में एक भावना होती है, और भावना की जड़ में कोई ना कोई रिश्ता होता है। और कोई भी रिश्ते के बगैर भावना पैदा नहीं होती।
संबंधो रिश्ते नाते भावनाओं का स्त्रोत होता है। परंतु भावनाओं की यह कड़ी गलत समझनी है!

हमारी भावनाओं के अधिक मोह ना करो, निष्काम कर्म करो, धीरमती बनो, और परमात्मा दर्शन का और लाभ लो.!

भावना से मोह उत्पन्न होता है!

रिश्ते के नाते:

रिश्ते, नाते, मृत्यु शरीर के साथ शोक मनाते हैं!
मित्र : 2 दिन रोना,
पुत्र : 4 दिन रोना,
पत्नी : अधिक रोती,
माँ : सबसे ज्यादा रोती है!

रिश्ते, नाते मृत्यु शरीर को आग देते हैं!

राख नदी में डालते हैं!

रिश्ते, नाते आत्मा से छुटकारा पाने के लिये गंगा स्नान करते हैं!

भावना के प्रभाव से यह सब होते हैं!

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

DATE:

भावना:
संबंधो और रिश्तो से ही भावना का जन्म होता है, कर्म करने के लिये, किसी-न-किसी भावना का होना जरूरी है, और भावना के लिये रिश्ते जरूरी है, भावना को त्याग देगा, तो कर्म किसके लिये करेगा, कर्म अपने धर्म के लिये करेगा।

धर्म: धर्म के लिये भावना की आवश्यकता नहीं होती, धर्म के लिये भावना की नहीं, अपने कर्तव्य के ज्ञान की आवश्यकता होती है।

मनुष्य यह समझे की कोई भी परिस्थिती में उसका कर्तव्य क्या है, यही धर्म है, और इसके लिये कर्म करे.

भावना तो कभी कर्तव्य के रास्ते में आती है, और कर्तव्य के लिये कर्म करने को रोकती है। भावना मनुष्य को कमजोर कर देती है। मनुष्य को झूठ बोलने के लिये विवश कर देती है। और मनुष्य झूठ बोलने का कर्म करता है, और मनुष्य धर्म के लिये कर्म नहीं कर पाता है।

धर्म संकट

हर प्राणी अपने धर्म का विधान स्वयम बनाता है, हर मनुष्य अपना धर्म स्वयम बनाता है। धर्म का विधान किसी दुसरे ने बनाया हो, तो वह आपका धर्म नहीं हो सकता, अपना धर्म नहीं है, तो आपने बनाया हो, जिसे आपकी आत्मा ने स्विकार किया हो, धर्म व्यक्तिगत है, जिसका फैसला स्वयम करना पड़ता है।

यदी एक स्त्री को 2 या 4 मनुष्य प्रेम करते है, तो उस स्त्री को स्वयम निर्णय लेना पड़ेगा, की वह जिसे चुने, तो उसका आदर करेगा, अनादर करेगा, उसी को वह चुने, यही वह स्त्री का धर्म है, और कर्म करे.

DATE:

कर्म योग:
मन का रवैया बदल के एक ही क्षण में निरासक्त योगी बन जाता है। मन का रवैया बदलने के लिये, कर्म फल की इच्छा पाने के लिये कर्म मत करो।

कर्तव्य व धर्म की तरह कर्म करो, निष्काम कर्मयोग, निरासक्त योग को समझो, तो जीवन में शांती आजायगी. और निष्काम कर्म करोगे.

पारब्धी:
पारब्धी को मनुष्य स्वयम बनाता है, मनुष्य के कर्म उसकी पारब्धी बनाता है। अच्छे कर्म करेगा, तो अच्छे फल पायेगा और बुरे कर्म करेगा तो बुरे फल पायेगा। इसी को ही पारब्धी कहते है।

पुण्य कर्म के सुख व पाप कर्म के दुःख इसी जन्म में भोगने पड़ते है, या अगले जन्म में भोगनाही पड़ता है, यह टल नहीं सकता है।

जिस नियत के साथ कर्म करोगे उसी नियत के साथ फल अवश्य मिलेगा।

!! कर्म करना प्राणीओं के हाथ में है! पर फल मिलना प्राणीओं के हाथ में नहीं है, इसी को ही पारब्धी कहते है !!

DATE:

कर्म: सबसे महत्वपुर्ण है कर्म कैसे किये जाये ?

⇒ प्राणी का कोई भी कर्म नष्ट नहीं होता है, उसका फल उसे अवश्य मिलता है।

इसी कारण मनुष्य जन्म-जन्मांतर के चक्र में फस जाता है। और मोक्ष प्राप्ती नहीं होती है, कर्म की इच्छा का फल रख के काम करता हुआ मनुष्य सुख व दुःख भोगने के लिये भटकता तथा जन्म लेता रहता है। और आत्मा का परमात्मा से मिलन नहीं होता और मोक्ष प्राप्ती से वंचित रहकर मनुष्य का जीवन चक्रविव में फस जाता है।

परमात्मा
मनुष्य कर्म
मनुष्य कर्म
मनुष्य कर्म

कोई भी प्राणी अकर्म नहीं हो सकता, प्राणी को हर हाल में कर्म करना पड़ता है, खाना, पीना, उठना, बैठना, चलना, फिरना, यह सब कर्म है।

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

DATE:

कोई भी जिवन के साथ किया हुआ कर्म के कारण प्राणी माया-जाल में फस जाता है, जन्म-संसार के भव चक्र में उलझके मोक्ष प्राप्ती नही कर पाता है।

पाप व पुण्य से मुक्ती पाने के लिये, मनुष्य निष्काम कर्म करे, कर्तव्य को धर्म समजके निष्काम कर्म करे, यह कर्म पाप व पुण्य में नही तोला जाता है। और सुख व दुःख इसके आधीन नही होता,

कर्मयोगी बनो, कोईभी वस्तु के आकर्षण के कारण मन को विचलित मत होने दो, धर्म समजकर मन को काबु में रखो.

!! मनुष्य केवल कर्म कर सकता है। फल कदापी मनुष्य के आधीन नही है, फल तो पारब्रह्म है !!

कर्मयोगी बनो, कर्मयोग के कारण मन इधर-उधर भटकता नही है। मन काबु में रहता है। और बुध्दी स्थिर हो जाती है।

DATE:

कर्मबंधनोंसे मुक्ती व पारब्रह्म का फल :

→ निष्काम कर्म करनेसे कर्म के बंधनो में बंधा नही जाओगे, कर्म फल में आसक्ती मत रखो, इच्छा करने से मनुष्य को फल की प्राप्ती नही होती है। फल तो पारब्रह्म के हात में है।

जो भी मनुष्य फल प्राप्ती की इच्छा करता है, उसका मन फल के बारे में सोचकर, अपने कर्म व कर्तव्य से विचलित हो जाता है। और उसे वह फल प्राप्त नही होता है, जिसकी उसने इच्छा कि थी। मनुष्य केवल कर्म कर सकता है। फल कदापी मनुष्य के आधीन नही है।

मनुष्य का धर्म है, कर्तव्य करना, उसके लिये आवश्यक कर्म करना।

जो मनुष्य फल की इच्छा से कर्म करते, वह सुख व दुःख में फस जाते है। और उनकी मन शांती नष्ट हो जाती है। हर पल, हर समय, फल प्राप्ती की विचार से उसकी निंद्रा उड जाती है।

NO:
DATE:

क्योंकी पारब्रह्म की योजना कोई और थी। मनुष्य के हर प्रकार की इच्छा विफल सारे प्रयास विफल हो जाने के बाद, छल-कपट से कर्म करते है। बार-बार प्रयास करनेसे इच्छानुसार फल प्राप्त नही होता है। की मनुष्य भूल जाता है, की फल पारब्रह्म अनुसार मिलता है। और बुरा कर्म का फल ही उस मनुष्य को मिलेगा। क्योंकी मनुष्य के इच्छानुसार फल नही मिलेगा.

बुराकर्म का	: बुराकर्म फल	पारब्रह्म फल देगा।
अच्छा कर्म का	: अच्छा फल	

मनुष्य को बुराकर्मों का अच्छा फल न मिलनेसे, मनुष्य क्रोधीत, व चिडचिडा हो जाता है। और बुध्दी भ्रष्ट होती है। और मनुष्य का सर्वनाश होता है।

मोह :

NO:
DATE:

मनुष्य मोह के दल-दल से निकल कर, सामे, असलमे, का ज्ञान होता है। तो उसको कोई भी वस्तु का आकर्षण नही होता है। वह निरासक्त होता है। फल की वासना से, फल पर ही दृष्टी रखा मनुष्य उत्तम कर्म करने पर भी, कर्मयोगी नही हो सकता, ऐसे मनुष्य को कुछ लाभ हो सकते है। परंतु लाभ का अभिमान रहता है। किंतु परमात्मा व शांती प्राप्त नही हो सकती है।

आत्मज्ञान से पहले मनुष्य मुक्त होगा, पर पुण्य से मुक्त नही।

सुख, दुःख, लाभ, हानी यह सर्वसाधारण मनुष्यों के लिये है। परंतु कर्मयोगी होते है। वह कर्मों से मुक्त होते है। अलिप्त होते है।

कर्मयोगी अपने अंतर आत्मा की आवाज को सुनके परमात्मा के आदेश मानकर आचरण करते है।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

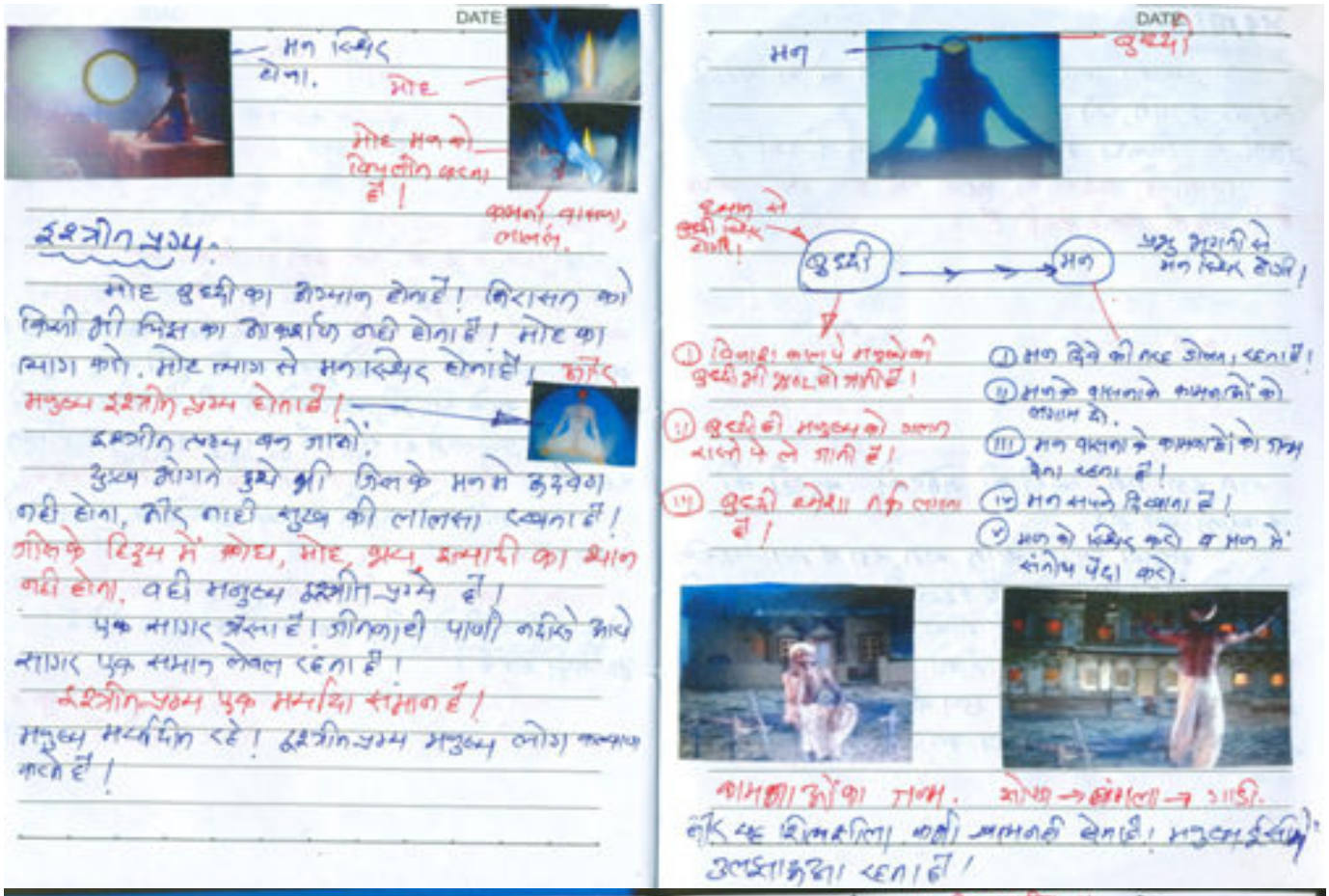

DATE:

मन स्थिर होना।

मोह

मोह मन को विचलित करता है!

कामना, वासना, लालच।

इन्द्रीयजीत प्रथम.

मोह बुद्धी का अज्ञान होता है! विरासत को किसी भी चिज का आकर्षण नही होता है! मोह का त्याग करो. मोह त्याग से मन स्थिर होता है। और मनुष्य इन्द्रीयजीत प्रथम होता है।

इन्द्रीयजीत प्रथम बन जाओ।

दुःख भोगने पर भी जिसके मन मे उद्वेग नही होता, और नाही सुख की लालसा रखता है! जिसके दिल मे क्रोध, मोह, भय, इत्यादी का स्थान नही होता, वही मनुष्य इन्द्रीयजीत प्रथम है!

एक सागर जैसा है। जितनी भी पानी नदियो आये सागर एक समान लेवल रहता है!

इन्द्रीयजीत प्रथम एक समंदर समान है!

मनुष्य मर्यादित रहे! इन्द्रीयजीत प्रथम मनुष्य लोग कल्याण करते है!

DATE:

मन — बुद्धी

इन्द्रीयो से बुद्धी स्थिर नही!

बुद्धी → → → मन

प्रभु भक्ती से मन स्थिर होगा!

(i) विनाश काल मे मनुष्यो की बुद्धी भी भ्रष्ट हो जाती है!

(ii) बुद्धी ही मनुष्य को अलग रास्ते पे ले जाती है!

(iii) बुद्धी अच्छा निर्णय लेता है!

(i) मन हवे की तरह डोलता रहता है!

(ii) मन के वासना के कामनाओं को जन्म दे.

(iii) मन वासना के कामनाओं का जन्म देता रहता है!

(iv) मन सपने दिखाता है!

(v) मन को स्थिर करो व मन मे संतोष पैदा करो.

कामनाओं का जन्म. क्रोध → बंधन → शांती.

और यह सिलसिला कभी समाप्त होता नही! मनुष्य इसी मे उलझा रहता है!

!! प्राणी का चरित्र !!

रजोगुण : मार-धाड़, लाग-धाड़ का लालसी होता है!

तमोगुण : आलसी व प्रमादी होता है, द्वेष, क्रोध, जैसी नकारात्मक भावना कुट-कुट कर भरी होती है! यह अत्याचार करता रहता है! लोगो को मारता है, गाली देता है! अन्त मे इसको दुःख मिलता है!

सतोगुण : उत्तम गुण है, सात्विक मनुष्य सीधा व सरल होता है!

हर प्राणी मे जो गुण अधिक होता है वैसी ही प्रवृत्ती होती है! इसी मे रुची हो जाती है! हर मनुष्य अपने प्रवृत्ती व रुची के अनुसार काम करता है और कामना करता रहता है!

NO:
DATE:

प्रवृत्ती

मनुष्य ना मनकी इच्छानुसार कर्म करे, ना बुद्धी की आज्ञा माने, तो मनुष्य क्या करे.?
प्रवृत्ती के विरुद्ध मनुष्य कैसे जीवन जगेगा ?

प्रवृत्ती को बदलने के पहले यह जानलेना आवश्यक है! प्रवृत्ती बनते कैसी है!

सत, रज, तम यही तीन गुणोसे सृष्टी की रचना की है!

मनुष्य अपने साथ सत, रज व तम यह तीन गुणो को लेकर जन्म लेता है! इसनी गुणात्मक सृष्टी मे रहने वाले समस्त प्राणी तीनो गुणो से विद्यमान है! परंतु हर प्राणी के अंदर तीनो गुणो मे से एक गुण अधिक प्रधान होता है! जिस गुण की मात्रा अधिक होती है, उसी के अनुसार प्राणी का चरित्र बन जाता है!

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

NO:
DATE:

सुख की परिभाषा :

कोई भी प्रवृत्ती का मनुष्य हो, स्त्री हो या पुरुष हो, गरीब हो या अमीर हो, सब सुख की ही कामना करते हैं! और कर्म करते रहते हैं! दुःख की कामना कोई नहीं करता! मनुष्य कभी दुःखी नहीं होना चाहता!

सुख की परिभाषा व्यक्ती के प्रवृत्ती अनुसार बदल जाती है!

एक साधु को दुसरों को सुख देकर सुख मिलता है! दुसरों की साधना करके खुश होता है!

एक निच प्रवृत्तीवाला मनुष्य दुसरों को दुःख देकर सुखी होता है, दुसरा सुखी हो, तो उसको दुःख होता है!

सुख की परिभाषा हर प्राणी के लिये मती अनुसार अलग-अलग है!

सुख व दुःख का चक्र

NO:
DATE:

दुःख सुख

किसी को भी स्थाई सुख प्राप्त नहीं होता है! ना सुख स्थाई है ना दुःख स्थाई है! यह सुख, दुःख का चक्र चलता रहता है!

यह संसार परिवर्तनशील है! यहा हर क्षण परिवर्तन होता रहता है! परिवर्तन ही जगती का नियम है! हमारे शरीर की अवस्थायें स्थाई नहीं है! इसलिये सुख व दुःख कैसे स्थाई होगा! सुख के साथ-साथ मनुष्य को दुःख भी भोगना पड़ता है! [बालपन, जवानी व बुढ़ापा प्रकृती परिवर्तन है]

मनुष्य बुढा हो जाता है!

आसक्ती जनक कामनायें कभी बुढी नहीं होती है!

कामना :

भोगासक्ति भोग द्वारा आमोद पर विजय पाना अती आवश्यक है! क्योंकी, कामनाओं की पुर्ती हो कर भी, कभी नहीं पुरी होती, मनुष्य बुढा हो जाता है! परंतु आसक्ती जनक कामनायें कभी बुढी नहीं होती.

कामनाओं का त्याग करके स्थितप्रज्ञ बनो.

कामनायें :

NO:
DATE:

एक कामना अनेक कामनाओं को जन्म देती है! हर कामना के साथ मनुष्य की आसक्ती भी (लोभ) भी बढ जाती है! और आशा के साथ असंतोष भी बढता जाता है! फिर ऐसे असंतुष्ट मनुष्य को, जो कामनाओं से ग्रस्त है! उसे उचित-अनुचित का विवेक नहीं होता, इसलिये मनुष्य कामनाओं का त्याग करके, स्थितप्रज्ञ बन जाये. जो कर्म योगी की चरम अवस्था है!

स्थितप्रज्ञ बनने के लिये आवश्यक है स्थिर बुद्धी, आशा व निराशा दोनों से मुक्त होकर ही मनुष्य बुद्धी को स्थिर कर सकता है!

बुद्धी स्थिर होगी, तो इंद्रीयों का बल घट जायेगा, यदी कोई इंद्रीया न होने से उस इंद्रीयों का विषय नष्ट नहीं होता.

परमात्मा
स्त्री
मनुष्य की कल्पना

आँखे न होने से भी आँखों के विषय एक परमात्मा की कल्पना कर सकता है और एक स्त्री की भी. आँखें हर रूपकी कल्पना कर सकता है!

NO:
DATE:

आँखे न होने पर भी उसका मन ऐसी सुन्दरी की कल्पना कर सकता है! जो उसे विषयों के मोह में भटकाये चले जाये!

मनुष्य के शरीर में कोई इंद्रीया होने या न होने में वासना और आसक्ती में कोई फर्क नहीं पड़ता.

शरीर है पुजा मे

मन में कुछ और ही चलते कुछ और है!

मन है स्त्री में

कोई मनुष्य आँखे बंद करके भगवान का ध्यान लगाये बैठा है! परंतु वास्तव में उसी का मन की आँखों में भगवान की मुरत नहीं, अपने प्रेमीका का शरीर घुम रहा है! इसका मतलब है! उसके आँखे तो बंद है, परंतु आँखों के विषय उसको फिरभी आधीन कर रहे है!

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

NO:
DATE:

विषयों का त्याग :

— विषयों, कल्पना, आशा,
— हठ, उपवास,

हठ के द्वारा किया गया हठ.

कोई लोग अपने इंद्रियों पर बड़ी कठोरता से क्रिया करने के लिये बड़े कठिन व्रत व उपवास रखते है! कहीं-कहीं दिनों तक खाना-पीना छोड़ देते है! फिर भी ऐसे उनका मन भाग-भागकर स्वादिष्ट भोजनों की वासना में भटकता रहे, तो हठ के द्वारा किये गये इन व्रत, उपवास आदि का क्या लाभ. यह लोग हठ के द्वारा अपने इंद्रियों को सुखा के निर्बल तो कर देते है। परंतु इससे विषयों की आसक्ति का त्याग नहीं हो सकता!

विषयों से अधिक खतरनाक है, विषयों की आसक्ति। विषयों की आसक्ति का त्याग केवल इंद्रियों के निग्रह से नहीं हो सकता, आसक्ति का त्याग केवल मन के निग्रह से होता है! जब मन निरासक्त हो जाये, तो इंद्रियाँ अपने-अपने विषयों को भोगते हुए भी, इन विषयों से निरासक्त रहती है!

NO:
DATE:

पहले ध्यान के द्वारा बुद्धि को स्थिर करो, बुद्धि मन को स्थिर कर देगी। फिर मन इंद्रियों को इस प्रकार विषयों से खींच लेगा, जिस प्रकार एक कछुवा खतरे की जरासी आहट पड़ते ही अपने अंगों को भीतर समेट लेता है!

— मन स्थिर करो.
विषयों —
— इंद्रियों के विषयों.

इंद्रियों के विषयों को निरासक्त रखो.

स्थितप्रज्ञ मनुष्य :

स्थितप्रज्ञ मनुष्य की बुद्धि स्थिर रहती है अपने मन पर उसका नियंत्रण रहता है! इस मनुष्य को भोग व उपभोग में रस की आसक्ति नहीं होती, वह शुभ-अशुभ वस्तु प्राप्त होने के बाद भी न प्रसन्न होते है, ना दुःखी होते है। ऐसे महापुरुषों को पूर्ण विश्वास होता है, की ईश्वर सदा-सर्वदा उनके साथ है! इसलिये किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होते,

NO:
DATE:

साधारण मनुष्य के लिये स्थितप्रज्ञ के मानसिक स्तर पे पोहचना बहुत कठिन है! इसलिये दैवी शक्ति की जरूरत पड़ेगी!

मनुष्य ने अपने पुरुषार्थ के साथ-साथ प्रभु भक्ति का भी आश्रय लेना चाहिये, परमात्मा की भक्ति करने से मन सात्विक हो जाता है! और विषयों सभी धुर्णता समाप्त हो जाती है!

यदि आसक्ति का नाश नहीं हुआ, तो मनुष्य का सर्वनाश हो जाता है!

आसक्ति के मारे हर मनुष्य किसी भी विषयों के आकर्षण, मोह में फसकर सोते, जागते, निरंतर उसी का चिंतन करते रहते है!

— क्रोध
— स्त्री का प्रेम, आकर्षण
आकर्षण व मोह

जैसे कोई मनुष्य सुंदर स्त्री के प्रेम में पडता है। तो जागते हुए, उसी की कल्पना, और सोते हुए उसी के सपने देखता है, इस प्रकार निरंतर चिंतन से आसक्ति की जिद पर कामना की भावना उभरने लगती है!

क्रोध :

NO:
DATE:

काम या वासना में थोड़ी भी रुकावट आने से, क्रोध का आगमन होता है!

उसका क्रोध है, वह संमोह, अविचार अथवा अविवेक भी है, जिस प्रकार तेज वायु के झोंके से दिपकी ज्योति बुझ जाती है! उसी प्रकार काम जनक अविवेकी आंधी से मनुष्य की स्मृति नष्ट हो जाती है!

क्रोध — काम जनक अविवेक — स्मृति नष्ट

— बुद्धि भ्रष्ट

मनुष्य की स्मृति नष्ट हो जाती है, तब बुद्धि नाश हो जाती है!

मनुष्य का सर्वनाश

चालक का नाश होने पर, जो दशा वाहन की होती है, ठीक वही दशा बुद्धि का नाश होने पर मनुष्य की हो जाती है! बुद्धिनाश के कारण मनुष्य का सर्वनाश हो जाता है!

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

DATE:

ध्यान के द्वारा बुद्धी स्थिर करो, और बुद्धी द्वारा मन स्थिर होगा। [आशा व निराशा]

इंद्रीया: आँखे, नाक, कान, मुख, जीभ, मूलाधार

बुद्धी (नाक)

मन (मन की वासना) मोह, माया, लालच, मन निरासक्त चाहिये.

मन में संतोष पैदा करो.

① आकर्षण
② प्रेम
③ वासना

इंद्रीयों द्वारे मन कामनाओं प्रेरीत करती रहती है। इसलिये कामनायें कभी पुरती या पूर्ण नही होती. हमेशा कामनाये क्षेत्र/जागी और पुरी ज्ञापक रहती है!

॥ प्रभुका निरंतर चिंतन करो. ॥

॥ प्रभु भक्ती से ही मन स्थिर होता है ॥

DATE:

काम का परिणाम / इश्वरीन पाये मनुष्य :

वास्तव में काम तो एक शक्ती श्रोत है! फिर वह सर्वनाश का कारण कैसे हो सकता है?

⇒ काम एक शक्ती श्रोत है! इसके द्वारा मनुष्य जीवन में परमानंद को प्राप्त कर सकता है! परंतु यदी काम की शक्ती मनुष्य की नियंत्रण में ना रहे, तो वह शक्ती प्राणी का सर्वनाश कर देती है!

कोई भी शक्ती हो, ऐसी उसका दुरुपयोग किया जावे, तो परम विनाश कारक हो जाती है! और सद् उपयोग किया जावे, तो वही शक्ती वरदान बन जाती है!

काम के आधीन होने के बजाये, यदी काम को अपने आधीन कर लिया जाये, तो मनुष्य का जीवन सुखमय हो जायेगा!

आकर्षण, प्रेम, वासना यह सब काम के ही रूप हैं!

जब उदात्त भावना मन में होती है, तब काम प्रेम का स्वरूप धारण करता है, फिर वही प्रेम शक्ती का रूप धारण कर लेता है,

परंतु काम के आधीन मनुष्य हो जाता है, तब वह काम वासना में बदल जाता है! जब मनुष्य को पशु बना देता है, और मनुष्य पशु बन जाता है!

NO:
DATE:

मनुष्य का रूप पशु

मनुष्य पशु बनता है, तब अत्याचार और बलात्कार का जन्म होता है! काम जैसी शक्ती मनुष्य के लिये एक श्राप बन जाता है! यदी आसक्ती का त्याग नही किया, तो मनुष्य का पतन निश्चीत है!

आसक्ती उत्पन्न होने पर कामकी उत्पत्ती होती है! और यही काम मनुष्य को सर्वनाश की ओर ले जाता है!

आसक्ती सर्वनाश का मूल है! इसलिये मनुष्य निरासक्त होना चाहिये!

मनुष्य को थोडीसी सफलता, थोडासा धन उसे हजम नही होती, धन व सफलता में चूर होकर मर्यादा छोडकर एक किट प्राणी की तरह हरकतें करने लगता है!

ईश्वरीन-प्राप्त मनुष्य एक सागर की भांती होता है! कितनाही लाभ, हानी होने से ईश्वरीन-प्राप्त मनुष्य सागर की तरह एक समान व शांत रहता है! और लाभ, हानी का परिणाम मन पर नही होने देता, निरासक्त रहता है!

NO:
DATE:

योगी जागे योगी पाये!

योगी [स्थिर मन]

← मन

भोगी सोय!
भोगी
भोगी सोय!

[विचलीत मन]

भोगी / योगी :

सामान्य मनुष्य तो भोग की पिछे दौडते हुये अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर देता है! परंतु ईश्वरीन प्राप्त मनुष्य की जीवन यात्रा जन कल्याण का उद्देश्य रखती है!

सामान्य मनुष्य, रात्री का अंधकार होने पर सो जाता है! तथा सुर्योदय होने पर जाग जाता है! परंतु योगी की दृष्टी में दिन का सोना जागना महत्वपूर्ण नही है!

कर्म योगी ज्ञान के प्रकाश को दिन तथा अज्ञान के अंधकार को रात मानता है!

विषयों के बारे में अज्ञान रात्र की अंधकार के समान है, संसारी मनुष्य के रात्रीयों के समान अज्ञानी नासवान, संसारीक सुख व दुःख भोगो में ही वेस्त रहते है! ज्ञानी और योगी जागते है! और परमात्मा का चिंतन करते है!

एक ही रात्र को भोगी, योगी अपने-अपने ढंग से बिताये, भोगी सोय, योगी जागे, भोगी खोये, योगी पाये!

परमात्मा
मोक्ष प्राप्ति

कर्म योग ज्ञानयोग कर्म योग ज्ञानयोग

मोक्ष प्राप्ति :

ज्ञान योग व कर्म योग दो अलग-अलग साधन है। परंतु उनका लक्ष्य एक ही है। और दोनों मार्गों से साधक मोक्ष को ही पाता है। इसलिये दोनों योग उत्तम है।

परंतु ज्ञान योग के आधारित ज्ञानयोग की साधना कठिन है। इस के मुकाबले कर्म योग की साधना आसान है।

जब मनुष्य अपने समस्त कर्मों को निष्काम भावना के द्वारा ईश्वर को समर्पित कर देता है। तो ऐसे कर्मों से कोई फल उत्पन्न नहीं होता, इस प्रकार मनुष्य अपने सारे कर्म ईश्वर को समर्पित करके। ईश्वर में लीन होकर स्वयं निष्कर्म हो जाता है। इस श्रम हीन अवस्था को ही नाम निष्कर्मता है।

यज्ञ समान कर्म :

जैसे कोई प्राणी कर्म करने के लिये विवश है, तो वह प्राणी किस प्रकार कर्म करे,

!!मनुष्य यज्ञ समान कर्म करे.!!

यज्ञ लोक कल्याण के लिये भी किया जाता है, और भगवान की आराधना के लिये भी। इसलिये जब कर्म करना हो तो, अपने सारे कर्म या तो लोक कल्याण के लिये करे, या ईश्वर के लिये करे। इसलिये मनुष्य के कर्म एक यज्ञ के समान पवित्र, कल्याण जनक और दिव्य हो जायेंगे। इसलिये धर्म को यज्ञ समान कर कर्म करना था। तो कर्म बंधन से मुक्त हो जायेगा। यह इसके अलावा जो कर्म किया जाता है, उसके होकर बाकी सब प्रकार के कर्म का बंधन मनुष्य को जकड़लेता है,

यज्ञ क्या है?

अपने प्रिय वस्तु, अपने धन-दौलत को, अपने किसी विशिष्ट भावना को, बल की अपने तीव्र कामना को भी परमात्मा को समर्पण कर देना, इसीको यज्ञ कहते है।

!!अपने प्रिये वस्तु की कुर्बानी यही यज्ञ की भावना है!!

यज्ञ के प्रकार :

यज्ञ में आहुती देने के पश्चात जो अन्न बच जाता है, उसे खाने वाला मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है। जो लोग केवल अपना ही पेट भरने के भावना से ही अन्न पकाते है। वो तो पापों का ही सेवन करते है।

अग्नी कुंड में आहुती देने का नाम यज्ञ है।

जन कल्याण का कोई भी कर्म यज्ञ है, अपने किसी प्रिये वस्तु का बलिदान अथवा त्याग भी यज्ञ है।

← हवन आदि यज्ञ
अग्नी कुंड वाले यज्ञ.

← धन आदि का दान यज्ञ

← निष्काम भावना
विद्या दान यज्ञ.

← प्राणायाम यज्ञ.

अष्टांग योग :

अष्टांग योग एक प्रकार की दिव्य चिकित्सा है। जिस से मानव के समस्त रोगों का नाश हो जाता है। चाहे शारिरिक शरीर के रोग हो, मानसिक रोग हो, चाहे आध्यात्मिक समस्या हो, सबके चिकित्सा के साधन, इस साधनो में प्राणायाम, मंत्र, तंत्र व योग प्रमुख है।

प्राणायाम यज्ञ :

प्राणायाम आधारित क्रिया को ये यज्ञ कैसे होते है?

→ योगी जब तंत्र व मंत्र, दोनों प्रकार की साधना पद्धती को के द्वारा कभी अपान वायु में प्राणवायु हवन करते है, और कभी प्राणवायु में अपान वायु का हवन करते है।

और कुछ योगी पुरी योग प्रक्रिया के द्वारा प्राण वायु व अपान वायु दोनों की गती को रोककर, अपने प्राणों का प्राणोमें हि हवन करते है।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

!! प्राणायाम !!

NO:
DATE:

पंचप्राण वायु:

(I) प्राण
(II) अपान
(III) व्यान
(IV) समान
(V) उदान

(I) शरीर के अंदर आनेवाली वायु को अपान वायु कहते है!
(II) शरीर के बाहर जानेवाली वायु को प्राण वायु कहते है!
(III) शरीर के सर्व स्थान पर पोहचने वाले वायु को समान वायु कहते है!
(IV) मरण समय बाहर जाने वाली वायु को उदान वायु कहते है!
(V) संपुर्ण शरीर मे है व्यान वायु!

प्राण व अपान वायु:

प्राणायाम के समय बाहर जानेवाली अर्थात उच्छवास वायु को प्राण कहते है! और भीतर आनेवाली श्वास वायु को अपान वायु कहते है!

— प्राणायाम ही एक योग है!

इस योग के समय अपान में अर्थात भीतर आयी हुई श्वास में प्राण का उस श्वास का हवन करनेसे पुरक नाम का प्राणायाम होता है! और इसके विपरीत प्राण में अपान का हवन करने से रेचक प्राणायाम होता है। प्राण व अपान इन दोनो के निरोध से ही प्राणायाम कुंभक होता है!

इसके अलावा व्यान, उदान व समान यह तीन वायु है! प्राणायाम योग करनेसे मनुष्य को लोग कल्याण कार्य, कर्म करने के लिये दिर्घ आयु प्राप्त होती है!

NO:
DATE:

इससे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ भी मिलता है! जिससे प्राणी को आध्यात्मिक चेतना प्राप्त होती है!

सर्वश्रेष्ठ योग.

ध्यान योग अत्यंत श्रेष्ठ है!

ध्यान मानव को अच्छे, बुरे, पाप, पुण्य, धर्म, अधर्म की पहचान कराता है! ध्यान के द्वारा ही मनुष्य को भगवान के स्वरूप का सही ज्ञान होता है! ध्यान ही जागते है, मानव के सारे अहंकार, द्वेष, पाप आदी को भस्म कर देता है! आत्मा का उगम भी ध्यान ही है!

ध्यान द्वारा मोक्ष
पर्वतपर ध्यान से ही मनुष्य पर्वत की चोटीपर पहोचके ही ज्ञान प्राप्त होता है! ध्यान ऊपर बिलकुल आकाश है! यहा आत्मा का राज्य है! मनुष्य आत्मा के आकार मे खो जाता है! वहा प्रभु उसका हाथ पकडकर अपने भीतर मे ले जाता है! वहा ध्यान से ही मनुष्य को श्रद्धा के पंख फुटते है! जिससे आकाश मे उडने लगता है और परमेश्वर प्राप्ती करता है!

NO:
DATE:

ध्यान के द्वारा मनुष्य पहिले अपने अंदर ही देखे, यहा सबकुछ समेटे हुवे अंदर ही दिखेगा! ध्यान सर्वश्रेष्ठ आमोद है!

रणयोग

धर्म के लिये कर्म करने के लिये क्षत्रियों को रणयोग करना चाहिये. लोग कल्याण के लिये निष्काम कर्म करना चाहिये. (Army)

जन्म भी परमात्मा है

मृत्यु भी परमात्मा है

जीवन देनेवाला व लेनेवाला भगवान है!
जो अपनाकी परमात्मा के बनाये हुवे रास्ते पर नहीं चलते है, वह नष्ट हो जाते है!

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

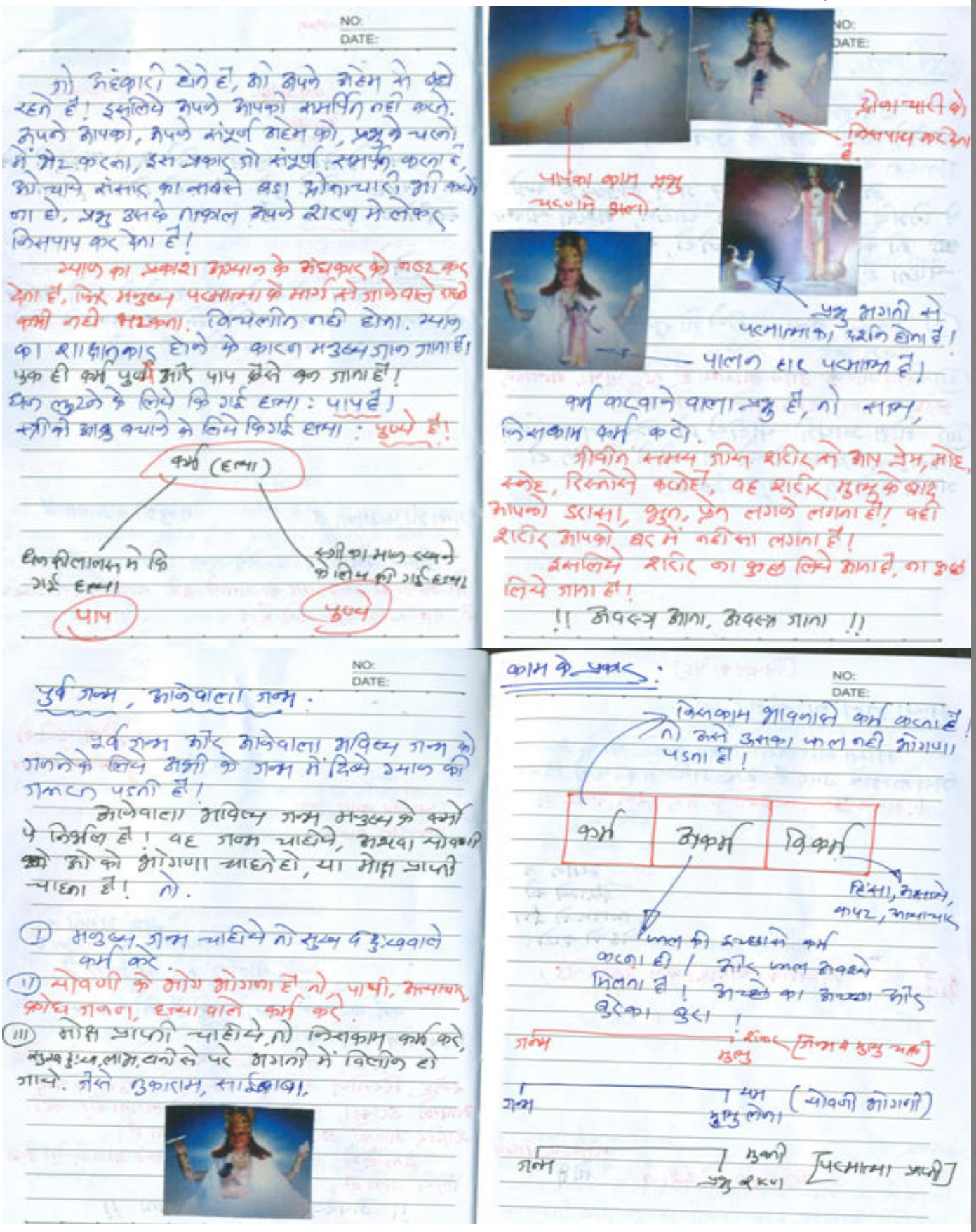

NO:
DATE:

जो अहंकारी होते हैं, वो अपने अहम में ही रहते हैं! इसलिये अपने आपको समर्पित नहीं करते. अपने आपको, अपने संपूर्ण अहम को, प्रभु के चरणों में भेट करना, इस प्रकार जो संपूर्ण समर्पण करता है, ओ त्याने संसार का सबसे बडा अत्याचारी भी क्यों ना हो, प्रभु उसके तत्काल अपने शरण में लेकर निष्पाप कर देता है!

ज्ञान का प्रकाश। अज्ञान के अंधकार को नष्ट कर देता है, फिर मनुष्य परमात्मा के मार्ग से जानेवाले पीछे कभी नही भटकता। विचलित नही होता. ज्ञान का साक्षात्कार होने के कारण मनुष्य जान जाता है! एक ही कर्म पुण्य और पाप कैसे बन जाता है! धन लूटने के लिये कि गई हत्या : पाप है। स्त्री की आब्रु बचाने के लिये कि गई हत्या : पुण्य है!

कर्म (हत्या)

धन लालच मे कि गई हत्या — पाप

स्त्री का मान रखने के लिये की गई हत्या — पुण्य

अत्याचारी को निष्पाप करते है.

पापका नाश प्रभु चरणमे आनेसे।

प्रभु भगती से परमात्मा का दर्शन होता है!

पालन हार परमात्मा है।

कर्म करवाने वाला प्रभु है, तो सदा, निष्काम कर्म करो.

जीवित समय जिस शरीर से आप प्रेम, मोह, स्नेह, रिश्ते करते हैं, वह शरीर मृत्यु के बाद आपको डरावना, भूत, प्रेत लगने लगता है! वही शरीर आपको घर में रखना नहीं लगता है!

इसलिये शरीर ना कुछ लिये आता है, ना कुछ लिये जाता है!

!! अवस्त्र आना, अवस्त्र जाना !!

NO:
DATE:

पूर्व जन्म, आनेवाला जन्म.

पूर्व जन्म और आनेवाला भविष्य जन्म को जानने के लिये अभी के जन्म में दिये ध्यान की जरूरत पडती है!

आनेवाला भविष्य जन्म मनुष्य के कर्मों पे निर्भर है! वह जन्म चाहिये, अथवा योनी ओ को भोगना चाहते हो, या मोक्ष प्राप्ती चाहता है! तो.

(I) मनुष्य जन्म चाहिये तो सुख व दुःखवाले कर्म करे.

(II) योनी के भोग भोगना है तो, पापी, अत्याचार, क्रोध जलन, हत्यावाले कर्म करे.

(III) मोक्ष प्राप्ती चाहिये, तो निष्काम कर्म करे, सुख दुःख, लाभ, हानी से परे भगती में विलीन हो जाये. जैसे तुकाराम, साईबाबा.

कर्म के प्रकार:

NO:
DATE:

निष्काम भावना से कर्म करता है! तो उसे उसका फल नहीं भोगना पडता है!

कर्म	अकर्म	विकर्म

विकर्म: हिंसा, अत्याचार, कपट, अन्याय

अकर्म: फल की इच्छा से कर्म करता है! और फल उसको मिलता है! अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा!

जन्म — मृत्यु (जन्म व मृत्यु चक्र)

जन्म — मृत्यु होना (योनी भोगनी)

जन्म — मुक्ती प्रभु शरण [परमात्मा प्राप्ती]

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

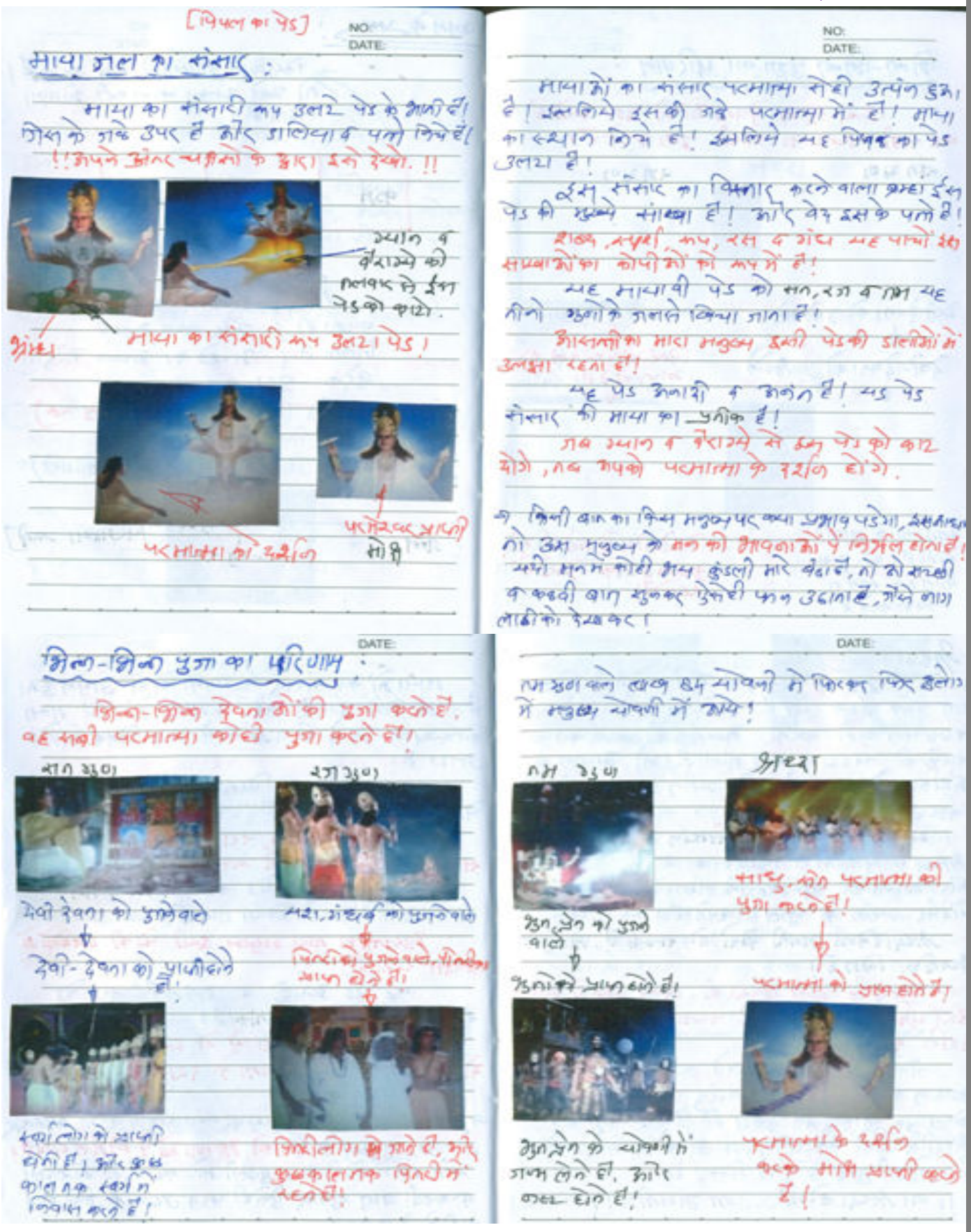

[पिपल का पेड]

NO:
DATE:

माया जाल का संसार :

माया का संसारी रूप उलटे पेड के भांति है। जिसके जडे उपर है और डालियां व पत्ते नीचे है।

!! आपने अंदर चक्षुओं के द्वारा इसे देखो. !!

ध्यान व वैराग्य की तलवार से इस पेड को काटो.

ब्रह्मा

माया का संसारी रूप उलटा पेड।

परमात्मा का दर्शन

परमेश्वर प्राप्ति मोक्ष

NO:
DATE:

मायाओं का संसार परमात्मा से ही उत्पन्न हुआ है। इसलिये इसकी जडे परमात्मा में है! माया का स्थान नीचे है! इसलिये यह पिपल का पेड उलटा है!

इस संसार का विस्तार करने वाला ब्रह्मा इस पेड की मुख्य शाखा है! और वेद इसके पत्ते है!

शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गंध यह पांचों इस शाखाओं का कोपलों के रूप में है!

यह मायावी पेड को सत, रज व तम यह तीनों गुणों के जलसे सिंचा जाता है!

आसक्ती का मारा मनुष्य इसी पेड की डालियों में उलझा रहता है!

यह पेड अनादी व अनन्त है! यह पेड संसार की माया का प्रतीक है!

जब ध्यान व वैराग्य से इस पेड को काट दोगे, तब आपको परमात्मा के दर्शन होंगे.

→ किसी बात का किस मनुष्य पर क्या प्रभाव पडेगा, यह तो उस मनुष्य के मन की भावनाओं पे निर्भर होता है! यदी मन में कोई भय कुंडली मारे बैठा है, तो वो साधारण व छोटी बात सुनकर ऐसी फन उठाता है, जैसे नाग लाठी को देखकर!

DATE:

भिन्न-भिन्न पुजा का परिणाम :

भिन्न-भिन्न देवताओं की पुजा करते है. वह सभी परमात्मा को ही पुजा करते है!

सत पुजा

देवी देवता को पुजनेवाले
↓
देवी-देवता को प्राप्त होते है।
↓

स्वर्ग लोग को प्राप्त होते है, और कुछ काल तक स्वर्ग में निवास करते है!

रज पुजा

यक्ष, गंधर्व को पुजनेवाले
↓
पितरों को पुजनेवाले, पितरों को प्राप्त होते है!
↓

पितरलोग को जाते है, और कुछ काल तक पितरों में रहते है!

DATE:

तम पुजा वाले लोग भूत योनी से फिरकर फिर से मनुष्य योनी में आये!

तम पुजा

भूत प्रेत को पुजने वाले
↓
भूतों को प्राप्त होते है!

भूत प्रेत की योनी में जन्म लेते है, और कष्ट होते है!

श्रध्दा

साधु, संत परमात्मा की पुजा करते है!
↓
परमात्मा को प्राप्त होते है!

परमात्मा के दर्शन करके मोक्ष प्राप्त करते है!

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

DATE:

श्रद्धा

मनुष्य अज्ञान के अंधेरे में अपने जीवन का हर पल गुज़ार रहा है। और इसलिये परमात्मा का समर्पण नहीं करता. अज्ञान ही समर्पण के रास्ते की रुकावट बन जाता है। तो अज्ञान के अंधकार को दूर करके और ध्यान प्राप्त करने का सरल साधन है श्रद्धा।

ध्यान प्राप्त करने का साधन केवल श्रद्धा है! श्रद्धा के बीज से ही विश्वास का अंकुर फूटता है। और आस्था का पौधा लहराने लगता है। फिर इसी पौधे पर ध्यान के फूल खिलते हैं।

श्रद्धा बिना भक्ति कैसे हो सकती है, श्रद्धा ही भक्ति का बीज है।

मनुष्य के लिये श्रद्धा ही दिव्य नेत्र है जिसके द्वारा एक अंधा मनुष्य भी परमात्मा के स्वरूप के दर्शन कर सकता है।

जैसे श्रद्धावान भक्तों को पत्थर मूर्ति में भी भगवान का रूप दिखता है। परंतु एक नास्तिक को केवल एक पत्थर का टुकड़ा ही दिखाई देता है। श्रद्धा न होने श्रद्धाहीन नास्तिक के सामने परमेश्वर हो, तो भी कुछ और ही दिखाई देगा।

!! ना श्रद्धा होगी... ना भक्ति !!

परमात्मा। श्रद्धा।

श्रद्धा + भक्ति + ध्यान

श्रद्धा ही एक सरल रास्ता है, जो मनुष्य को ऊंचाईयों की ओर ले जाता है। इसलिये, श्रद्धावान मनुष्य विद्वान बन जाता है। और जो मन में श्रद्धा ना होगी, तो वहां शंका, झूठे लांछन, संदेह के आधार इस प्रकार भटक जाता है। की ना तो इहलोक में सुख का रास्ता मिलता है। और ना परलोक में शांति प्राप्त होती है।

श्रद्धा + भक्ति + ध्यान = विद्वान + एकनिष्ठ + एकनिष्ठा के बिना नहीं चलता।

श्रद्धा ही मिलाये परमात्मा के चरणों में सफलता।

!! इसलिये मन में श्रद्धा रखो !!

DATE:

मनुष्य मायावी जाल में उलझा हुआ!

मनुष्य अंतिम श्वांस तक ही माया, मोह में पड़ा रहता है। इसी कारण जन्म के चक्रव्यूह में फंस जाता है। परमेश्वर ने इस मायावी सृष्टि की रचना करके, दूसरी ओर मनुष्य को चंचल मन प्रदान करके, माया व मन को एक-दूसरे में उलझा दिया है। पल-पल पर मनुष्य को बहकाने के लिये, भिन्न-भिन्न आकर्षण पैदा किये हैं! मनुष्य इसी जाल में उलझा रहता है! परमेश्वर इसी माया की लीला देखते रहते हैं।

परमेश्वर ने कर्म का विधान बना दिया है! जन्म-मरण का चक्र चला दिया है! और इस चक्रव्यूह में मनुष्य को फंसा दिया है!

मनुष्य परमेश्वर की ओर बढ़ने के बजाये अपने अहंकार में डूबा रहता है। मनुष्य उस भ्रम में रहता है कि संसार में उससे बढ़कर कोई नहीं!

मनुष्य अपने बुद्धि व बल पर ही भरोसा करता है। अपने आप पर परमात्मा से अधिक विश्वास होता है। पर जब मनुष्य परमेश्वर की कृपा चाहता है तब परमात्मा सिर्फ श्रद्धा के एक फूल, एक चावल का दाना, एक आंसू ही भेंट स्वरूप स्वीकार करता है।

!! पत्रम्, पुष्पम्, फलम्, तोयम्,
योऽमे, भक्त्या, प्रयच्छति,
तदहम्, भक्ति, उपहृतम्
अश्नामि, प्रयत, आत्मनः !!

भक्ति।

भक्ति का स्थान इतना ऊंचा है की धर्म का स्थान फीका हो जाता है। परंतु वास्तविक रहित भक्ति पूर्ण श्रद्धा व पूर्ण भक्ति से अपने आपको, अपने सारे कर्मों को मेरे परमेश्वर प्रति समर्पित कर दो. परमेश्वर ऐसे भक्तों को सब कुछ भुलाकर मुक्ति दे देता है!

भक्ति का स्थान इतना ऊंचा है की परमेश्वर भी गुलामी करता है!

परमेश्वर व भक्तों में भक्ति ही एक पवित्र रिश्ता है, जिससे मोक्ष प्राप्त होता है!

!! पृथ्वीलोक कोई, मृत्युलोक कहते हैं, यह पे प्राणी
जन्म → → मरण करता है! !!
पीड़ा सहता है।

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

DATE:

प्रभु प्रेरणा॥

हे भक्त वत्सल, हे भगवानो के भगवान, हे देवताओं के देवता, हे योगेश्वर, हे ब्रह्मांड नायक, आपने मुझे अज्ञानी को, पापके भागी को, अपने कृपासे जो श्रेष्ठ ज्ञान प्रदान किया है। मुझे अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश में लाके खड़ा किया है, उसके लिये मैं आपका आभारी हूं। इतना आभारी की मैं लाखो वर्षो तकभी आपके श्री चरणों में माथा टेके रखु और अपने आँखों से आंसु धारा-धारा के अश्रुओं के विशाल सागर भर दूं, तब भी इस उपकार चुका नहीं सकूंगा। इस परम ज्ञानी तथा आत्माके विद्या दान के लिये आपका कोटि-कोटि धन्यवाद।

आपके परम ज्ञानके आगे मैं अपना माथा टेकता हूं। और अपनी अहंकार बुद्धी, अपनी हर इच्छा, अपनी हर आशा, अपने हर कामनाके साथ

DATE:

मैं अपने आपको, अपने तन-मन से आपको समर्पित करता हूं। यह सब कुछ आपके ही दया का धन था। जो, आपके श्रीचरणों में रखता हूं। और अज्ञान के मारे मैं आपको केवल एक मनुष्य समझाकर हे, आपको अपना सखा, एक समझकर जाने-अनजाने में जो भी भूल की हो, अपने कहनाओं को धक्का पोहचाया हो, तो उसके लिये हे दया सागर, आप मुझे क्षमा कर दिजीये, और मेरे विनम्र समर्पण को स्विकार करके, अनु ग्रहण किजीये!

परमात्मा का निराकार रूप

जल, थल व गगन में भी परमेश्वर है! मानव संसार में तो परमेश्वर के रूप इतने हैं जो सब साकार रूप हैं! मनुष्य जो पूजन करते है देवी, देवताओं को वह सब आकार रूप कोही पुजते हैं! परंतु-

ज्ञानी, साधु, संत जो पुजते है परमात्मा को वह रूप निराकार है! ॐ

गोपीया

NO:
DATE:

साधु

कही किसी साधु गोपीओं के रूप में जन्म लेते रहते है।

स्नेह, प्रेम, आदर व श्रध्दा यह परमेश्वर भक्ती के प्रतीक है!

पुजा का महत्व.

पुजा मन की साधना होती है, साधना का विधी से क्या लेना-देना, परमात्मा भगवान भी भावना देखते हैं, परमेश्वर सभी प्रेम, स्नेह, श्रध्दा, आदर भक्ती भाव है क्या नहीं यह देखते है। जिस पुजा में विधीही-विधी हो और प्रेम तथा नहीं हो, ऐसे पुजा द्वारा कोई भी परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता, प्रेमही भक्ती है, प्रेम ही पुजा, पूर्ण रूपसे परमात्मा को भाओं में, परमेश्वर में मन लगाके, ध्यान लगाये. - - .

NO:
DATE:

योगी कला:-

संसार के झमेले से हटकर एकांत में प्रभु मे ध्यान लगाये, एकांत में मनुष्य अपने भितर झाक सकता है, परमात्मा का अंश मनुष्य के भितर ही निवास करती है! इसे एसी आत्मा से मिलन ही परमात्मा से मिलने का प्रथम चरण है। इसलिये जो मनुष्य परमेश्वर को चाहता है। उसे सबसे पहले अपने अंदर ही झांकना चाहिये, और यह तभी संभव हो सकता है, मनुष्य शरीर उसके नियंत्रण में हो! यदी देह काबुमें ना हो, तो मनुष्य को ध्यान लगाने का उद्देश ना मिल पायेगा। ध्यान लगाने का उद्देश परमात्मा को ~~संपर्क~~ संपूर्ण करना होता है! प्रथम इसके चरण में मनुष्य को आत्मा शुध्दी प्राप्त होती है! ध्यान करने की, और ध्यान लगाने वाले का अंदर निर्मल हो जाता है!

जबतक मनुष्य अपने अंदर की शुध्दी ना करलेगा, तब तक परमात्मा से ना तो संपर्क कर सकता है, ना ही आत्मा परमात्मा में लिन हो शकती है!

देह काबुमे रखो!

आत्मा शुध्दी भाली.

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

DATE:

ध्यान लगाने का स्थान व कार्य।

ध्यान लगाने का पहिला उद्देश अंतर शुद्धी है, इसलिये जो स्थान पवित्र होना चाहिये, वहा ध्यान लगाया जाता है।

परमेश्वर का ध्यान लगाने समय, आसन बैठकर, अपनी पिठ, सिर व गलेको समान और सिधा रखे. और अपने दृष्टी को अपने नाक के अग्र पर इस तरह जमाये, की दुसरी सारी दिशाये आँखो से ओझल हो जाये, ऐसा करनेसे, अपने आस-पास के वातावरण के इसके इंद्रियो का संपर्क टुट जायेगा! और मनुष्य अपने अंतर मे मन लगाये सकेगा!

और मनुष्य परमेश्वर में ध्यान न लगायेगा, जिसके जीवन में संतुलन ना हो. ध्यान लगाने में सफलता के लिये मनुष्य को संतुलन का पालन करने वाला होना चाहिये! भगतो को चाहिये, की ना इतना खाये की पेट हो की जो खाने के लिये जीता है! ना ही इतना कम खाये, की वह हड्डीओं का ढाचा बन जाये! ना ही इतना सोये की दिन को ही रात समझे, ना इतना कम सोये, की रात को ही रात ना समझे,

DATE:

मनुष्य की मृत्यु के बाद की स्थिती.

इस सृष्टी के प्राणीओं को मृत्यु के पश्चात अपने-अपने कर्मो के अनुसार पहीले तो उन परलोक में जाकर, कुछ समय बिताना होता है। जहा वो पहले जन्मों में किये हुये कर्मो अथवा पापकर्मो का फल भोगते है! फिर पुण्य व पापो के अनुसार सुख दुःख का हिसाब खतम हो जाता है! तब वह इस मृत्युलोक मे फिरसे जन्म लेते है! इस मृत्यु लोक को कर्मलोक भी कहा जाता है! क्योंकी इस लोक में प्राणी को वह कर्म करने का अधीकार है जिससे उनकी प्रारब्ध बनती है।

केवल इसी धरतीपर ही प्राणी जन्म व मृत्यु कि पिडा सहते है! परलोक में प्राणीका ना जन्म होता है, ना मृत्यु होती है! मृत्यु केवल शरिर की होती है, आत्मा की नही! आत्मा तो ना जन्म लेती है, ना मरती है।

आत्मा को कही किसी भी स्थान पर या किसी काल में भी सुख दुःख छु नही सके. आत्मा तो परमेश्वरकी अविनाशी का एक अंश रुप है।

DATE:

सुख भोगेना, खुशीयों से नाचने ना लगे, यदी दुःख मिले, तो रो-रो कर अपने आपको हलकान ना करे! दुःख सुख के हवा के झोको से ना भडकने-बुझने वाला मनुष्य बस दिपककी ज्योती के भांती होता है! जो तेज हवामें भी सीधी व स्थिर रहती है!

मनुष्य ध्यान निंदा द्वारा परमात्मा में लिन होना चाहीये। तो उसके लिये आवश्यक है! की वो उसे माया में उलझा ना रहे! और मोक्ष प्राप्त करे।

अन्यथा, जन्म-जन्मांतर के चक्र विव में ऐसा फसा जायेगा, की निकलना ही ना सकेगा!

DATE:

परमेश्वर माया के आधीन नही है, बलकी माया परमेश्वर के आधीन है! और सुख दुःख तो माया की रचना है! इसलिये जब माया परमेश्वर को घेरे में नही ले सकती, तो माया की रचना को सुख, या दुःख परमेश्वर को कैसे छु सकती! सुख दुःख केवल शरिर के भोग है! आत्माके नही! और सुख दुःख माया की रचना है!

जीव आत्मा!

जब किसी की मृत्यु होती है, तब असल में शरिर की मृत्यु होती है! ये जो बाहर का स्थुल शरिर है, केवल यही मरता है। स्थुल शरिरके अंदर जो सुक्ष्म शरिर है! व नही मरता! वह सुक्ष्म शरिर आत्मा के संस्कार, को अपने साथ लिये मृत्युलोक से निकल कर दुसरे लोकों मे चला जाता है! उसी सुक्ष्म शरिर को जीव आत्मा कहते है!

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

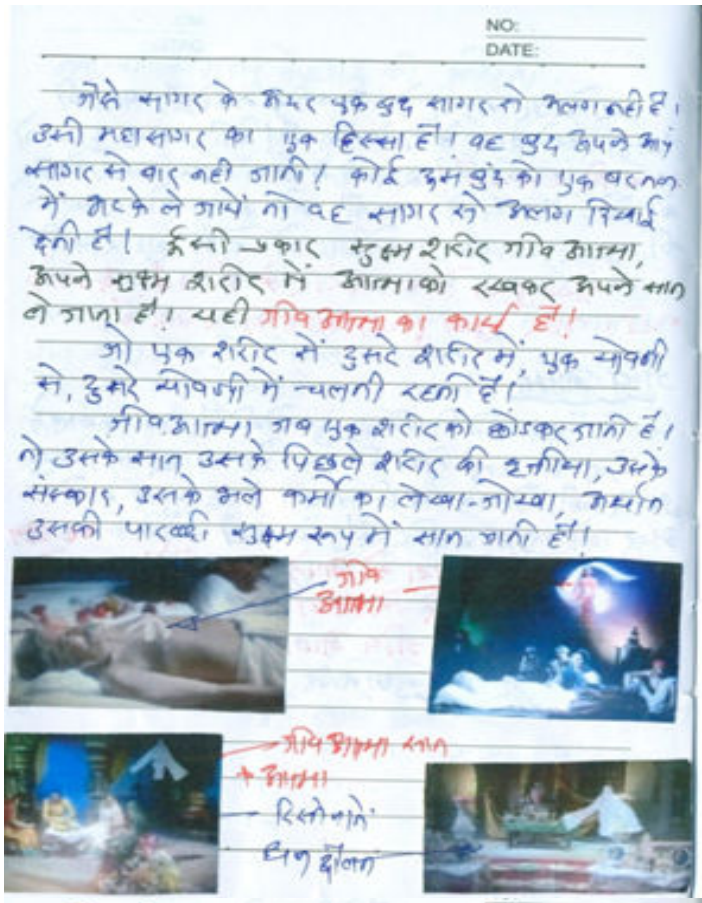

NO:
DATE:

जैसे सागर के अंदर एक बूंद सागर से अलग नहीं है। उसी महासागर का एक हिस्सा है। वह बूंद अपने आप सागर से बाहर नहीं जाती। कोई इस बूंद को एक बरतन में भरके ले जाये तो वह सागर से अलग दिखाई देती है। इसी प्रकार सूक्ष्म शरीर जीव आत्मा, अपने सूक्ष्म शरीर में आत्मा को रखकर अपने साथ ले जाता है। यही जीव आत्मा का कार्य है।

जो एक शरीर से दूसरे शरीर में, एक योनी से, दूसरे योनी में चलती रहती है।

जीव आत्मा जब एक शरीर को छोड़कर जाती है। तो उसके साथ उसके पिछले शरीर की इच्छाएं, उसके संस्कार, उसके भले कर्मों का लेखा-जोखा, अर्थात उसकी पारब्ध, सूक्ष्म रूप में साथ जाती है।

जीव आत्मा

जीव आत्मा साथ ले आत्मा

दिखाने में

चित्र द्वारा

जीव आत्मा के साथ जाने वाली आत्मा.

सूक्ष्म रूप शरीर में आत्मा, सुख दुःख का लेखाजोखा साथ लिये जीव आत्मा।

मानव शरीर त्यागने के बाद मनुष्य को अपने पारब्ध अनुसार अपने पापों और पुण्यों को भोगना पड़ता है। इसके लिये भोग योनीयाँ बनी हुई है। जो दो प्रकार की है।

उच्च योनीयां और निम्न योनीयां

एक पुण्य वाला मनुष्य का जीव आत्मा उच्च योनीयों में स्वर्ग में रहकर अपने पुण्य भोगता है। और पापी मनुष्य का जीव आत्मा निम्न योनीयों में नर्क में रहकर अपने पापों को भोगता है।

कहीं प्राणी स्वर्ग नर्क का सुख दुःख मृत्युलोक में ही भोग लेते हैं।

कोई संपन्न मनुष्य है, महल में रहता है, उसका एक लाडला जवान लड़का है, संसार में सबसे ज़्यादा प्रेम मोह करता है। और अपने को संसार का भाग्यशाली मनुष्य समझता है। परंतु एक दिन उसका लड़का दुर्घटना में मारा जाता है। तब उसके ऊपर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ता है।

DATE:

योनीयाँ :

उसके पास सब कुछ होने के बाद भी दुःखी रहता है। मरने तक वह पुत्र के मरने के विरह से मुक्त नहीं होता। पुत्र के जवान होने तक उस मनुष्य ने जो सुख भोगे हैं वह स्वर्ग की सुखों के भांति और पुत्र के मरने के बाद जो दुःख भोगे हो वह नर्क के दुःखों से बढ़कर है।

मनुष्य को इस जन्म में पिछले जन्म का सुख दुःख इस जन्म में ही भोगना पड़ता है।

योनीयों के प्रकार :

पुण्यवान मनुष्य अपने पुण्यों के द्वारा किन्नर, गंधर्व अथवा देवताओं की योनीयां धारण करके स्वर्गलोक में तब तक रहता है जब तक उसके पुण्य क्षीण नहीं हो जाते. अर्थात यह प्राणी के हिसाब में जितने

NO:
DATE:

पुण्य कर्म होते हैं, उतने ही देर तक उसे स्वर्ग में रखा जाता है। जब पुण्य के फल के भोग समाप्त हो जाते हैं। तो फिर उसे पृथ्वीलोक में वापस आना पड़ता है। और मृत्युलोक में पुनर जन्म धारण करना पड़ता है।

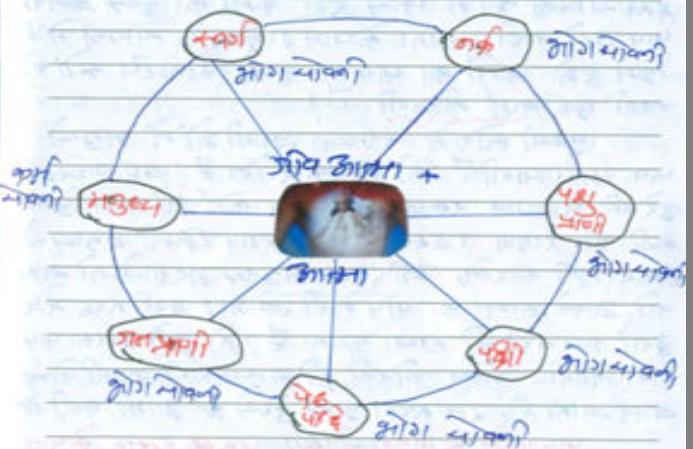

मनुष्य कर्म योनी में ही पाप व पुण्य का हिसाब रखा जाता है। इसके उपर योनीयां भोगनी पड़ती है।

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

मनुष्य योनी या भोगने समय स्वर्गलोक में जो कर्म करता है, या नर्क लोग में जो कर्म करता है, उसे पाप या पुण्य में नहीं तोला जाता है। क्योंकी यह सब भोग योनियां है! वह प्राणी केवल अपने बुरे कर्मों का फल सिर्फ भोगता है। इस योनी ओं में किये हुये कर्मों का पुण्य अथवा पाप उसे नहीं लगता. केवल मनुष्य के योनी में ही किये हुये कर्मों का पाप या पुण्य होता है! क्योंकी यही एक कर्म योनी है!

पृथ्वी लोक मे समस्त प्राणीओं में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जो विवेक शील है! वह अच्छे बुरे की पहचान रखता है! दुसरा कोई भी प्राणी ऐसा नहीं कर सकता! इसलिये कोई साप किसी मनुष्य को अकारण भी काटले, और वह मनुष्य मर जाये, तो साप को उसके हत्या का पाप नहीं लगेगा! इसी तरह शेर दुसरे जानवरों की हत्या करता है! तो उसे उसका पाप नहीं लगता. जब किसी की हत्या नहीं करती केवल घास खाती है, इस कारण उसे पुण्य भी प्राप्त नहीं होता।

पाप पुण्य के लेखा-जोखा परख अनुसार केवल मनुष्य का बनता है! इसलिये जब मनुष्य अपने पाप पुण्य भोग लेता है! तो फिर उसे मनुष्य की योनी में भेजा दिया जाता है। और मनुष्य योनी प्राप्त करता है। !!

सुक्ष्म शरिर जीव आत्मा है, जीव आत्मा ही आत्मा को अपने साथ ले जाती है! जीव आत्मा ही शरिर व योनी बदलता रहता है! जीव आत्मा ही सुख दुःख भोग भोगता है! और साथ में आत्मा को साथ रखता है। पर आत्मा ही परमेश्वर का रूप है! इसलिये आत्मा को सुख दुःख का कोई प्रभाव नहीं पडता है !!

मोक्ष प्राप्ती,

मनुष्य जन्म का प्रथम उद्देश है मोक्ष प्राप्त करना है! मोक्ष प्राप्त केवल मनुष्य योनी द्वारा ही प्राप्त हो सकता है! इसलिये मनुष्य शरिर को मोक्ष का द्वार कहा जाता है!

मानव शरिर बडी मुश्किल से मिलता है! इसे युही गवाना नहीं चाहिये! देवता भी मानव शरिर की आकांक्षा करते है! परंतु मनुष्य की विडंबना यही है! वह इस शरिर को अमोल मोती [illegible] अवसर को गवाता रहता है। सारी आयु भोग विलासो में बिताता है! यहां तक की जब शरीर छुटने का समय आता है तबभी वासना उसका पिछा नहीं छोडती है।

और इस तरह जन्म मृत्यु का कष्ट भोगते रहते है!

क्यों ऐसा कोई स्थान नहीं जहां से जन्म मरण में फिर से आना ना पडे ?

⇒ ऐसा स्थान परमधाम है! जहां से किसी को परत नहीं आना पडता है! इसी को मोक्ष कहते है!

शरिर के साथ आत्मा का परमात्मा के दर्शन हो सकते है! पर मिलाप नहीं, शरिर छोडने के बाद ही आत्मा का परमात्मा से मिलन हो सकता, जैसे पाणी की बुंद पानी में मिलती है और पानी में समा जाती है!

!! निष्काम कर्मों से जीव आत्मा, आत्मा के साथ परमात्मा के पास परमशांती पाता है! !!

!! मनुष्य शरिर ही मोक्ष का द्वार है !!

!! मृत्यु के समय जो वासना मनुष्य के मन में छिप रहती है! उसी वासना के अंतर्गत मनुष्य का दुसरा जन्म होता है! !!

प्राणीने चाहे अपना जीवन कैसा भी व्यतीत किया है! अंतकाल में यदी वह एकाग्र मन होकर केवल प्रभु का ध्यान करते हुये, शरिर का त्याग करे, तो वह सिधा परमात्मा के चरणों में जा पोहचता है। जहां से वापस नहीं आना होता है!

जैसे. जडभरत एक ऋषी था! उसने एक हिरन का बच्चा पाला था! और उसे बच्चे से उसको मोह हुआ था! अंत मरण के समय ऋषी का ध्यान वह बच्चे में था और अगली योनी उसे ऋषी को हिरण की योनी मिल गई थी!

!! अंत में मनुष्य ने संसार की किसी वस्तु में ध्यान नहीं लगाना चाहिये, केवल अपने परमात्मा में ही ध्यान लगाना चाहिये !!

अंतिम समय ध्यान
सिर्फ परमात्मा में ही!

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

मनुष्य को मृत्यु के समय पीड़ा.

मनुष्य को मृत्यु के समय बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है! मृत्यु को आसान कराने का कोई तरीका नहीं है!!

⟹ प्रश्न तो मृत्यु को आसान बनाने का नहीं है। बल्कि जीवन मृत्यु के चक्र से निकल कर मोक्ष प्राप्त करने का है!

यदि मनुष्य मृत्यु के समय यह विधि अपनाये तो उसे तुरंत मोक्ष प्राप्त होगा! और वह सीधा परमात्मा के धाम पोहच जायेगा!

योगिक विधी.

मनुष्य प्राण त्यागते समय अपने सभी इंद्रियों को द्वार को रोककर तथा मन को हृदय में स्थिर करके और प्राण को मस्तिष्क में स्थापित करके परमात्मा का स्मरण करते हुये ॐ मंत्र का उच्चारण करे. तो वह मनुष्य जीवन भर कितनी भी पाप क्यों ना किया हो! उसे मोक्ष अवश्य प्राप्त हो जायेगा!

ॐ केवल एक शब्द नहीं है, समस्त मंत्रों का शिरोमणी मंत्र है जो ॐ.

इसकी महीमा अनंत है. हर साधना का केन्द्र बिंदु ॐ है! यह वह आनंद है जिसकी साक्षात ध्यान व सारी सृष्टिमा उत्पन्न हुई है! ॐ की साधना ध्यान और भक्ति के मार्ग को प्रकाशित कर देती है! और अपने जीवन में ॐ का उच्चारण करने वाले प्राणीओं को सुख, समृद्धी, वैभव और वैराग्य प्राप्त होता है!

मनुष्य के शरीर को ब्रह्मपुर कहा गया है! और मानव देह हृदय कमल में आत्मा की दिव्य ज्योती प्रकाशित रहती है!

मृत्यु के समय जब मनुष्य ॐ का मंद-मंद उच्चारण एक लय के साथ करता है! तो आत्मा और परमात्मा दोनो ही महासुख और महा आनंद के साथ नाच उठते है! और दोनो एक दुसरे से मिलन के लिये ऐसे व्याकुल हो जाते है! जैसे युगों-युगो से बिछडे दो प्रेमी सारी सिमायें तोडकर, एक दुसरे में समा जाने को, एक दुसरे की ओर बढते है! मानव शरीर को मुक्ति का द्वार कहा है! परंतु मनुष्य इसके महत्व को समझ नही पाता. इसी महत्व के कारण मानव शरीर की रचना ही विशेष रूपसे की गई है!

मनुष्य का देह एक छोटा सा ब्रम्हांड है! जिसमें समस्त लोकों का निवास है!

ब्रम्हांड, ब्रम्हलोक का प्रतीक है!

मनुष्य शरीर में पैरो से नाभी तक भुलोक है! जिसमे सब प्राणी का स्थान है!

नाभी से कंठ तक अंतरिक्ष है, तथा कंठ से कपाल तक स्वर्ग लोक है! और कपाल में महः, जनक, तप व सत्यलोक है!

साधक व योगी की जानकारी.

योगी जन मानव की इस बनावट को भलीभांती समझते है! इसलिये, देह त्यागने के समय प्राण को पहले उपर की ओर उठाकर कंठ में अर्थात अंतरिक्ष में ले जाते है! कंठ में विशुद्ध चक्र से आगे चक्र में ले जाते है! और यहा कपाल में सेसलाल में स्थापित करके ब्रम्हरंध्र के द्वारा ही अपने प्राण शरीर से निकाल देते है!

साधारण मनुष्य को इस विधि का ज्ञान नही होता. इसलिये. उनके प्राण, प्राण त्यागते समय दुसरे द्वारो से निकलते है!

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

Jay Shree Krishna .....!!!!
Vasant Borkar in Mumbai

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM